क्लारा की नई दुनिया

क्लारा का परिवार स्वीडन में एक अच्छा जीवन जीने के लिए संघर्ष करता है. लेकिन उनके खेत की मिट्टी खराब है, और वहां सूखा पड़ा है. घर में अनाज खत्म हो रहा है. यदि उनकी किस्मत नहीं बदली, तो क्लारा को ज़मीन के मालिक के लिए काम करना होगा, हालांकि वह केवल आठ साल की है.

फिर अमेरिका से एक पत्र आता है, जिसमें ऐसी भूमि का वर्णन है जो सुंदर, उपजाऊ और भरपूर है. क्लारा, माँ और पिताजी को नई दुनिया में जहाज़ द्वारा जाने के बारे में देर रात तक चर्चा करते हुए सुनती है. वह जानती है कि वह अब उसे अपनी हर चीज को पीछे छोड़ना होगा - घर, गाँव, कई लोग जिनसे वो प्यार करती थी, यहाँ तक अपने दादाजी को भी.

जीनट एक ऐसी यात्रा की कहानी सुनाती हैं जिसे 19वीं शताब्दी में अमेरिका जाने वाले हजारों बच्चों ने की. स्कैंडिनेवियाई प्रवासियों के पत्रों और डायरी के आधार पर, यहां एक युवा लड़की की एक नई दुनिया - यानि अमरीका की, उल्लेखनीय यात्रा का वर्णन है.

क्लारा की नई दुनिया

जेनेट

हमारी ज़मीन बंजर थी और पत्थरों से भरी थी. पापा ने बुआई के लिए ज़मीन को साफ़ करने के लिए बहुत संघर्ष किया, लेकिन उसके बावजूद वो हमारे लिए पर्याप्त भोजन नहीं पैदा कर पाए. बारिश नहीं हुई, और फसलें मर रही थीं. मम्मी और पापा चिंतित थे कि हम लोग सर्दियों में क्या खाएंगे.

हमारी बूढ़ी गाय ने दूध देना बंद कर दिया था. हम अपने आखिरी सुअर को मारकर खा चुके थे. माँ ने पास रोटी बनाने का आटा भी ख़त्म हो रहा था. अगर हमारी किस्मत नहीं बदली, तो मुझे पता था कि मुझे बच्चों का पालना झुलाने और सूअर व अन्य जानवरों की देखरेख के लिए कहीं काम खोजना पड़ेगा.

फिर एक दिन पापा के पास अमेरिका से एक पत्र आया:

प्रिय निल्स, मेरे वतन में मेरा दोस्त,

तुम्हें, तुम्हारी पत्नी, परिवार और बेटी क्लारा को बहुत-बहुत शुभकामनाएं. हमें खुशी है कि हम स्वीडन और स्मालैंड की ज़मीन को छोड़कर अमेरिका गए. यहाँ की ज़मीन अच्छी, शुष्क और उपजाऊ है. हम जो कुछ भी बोते हैं उससे बहुत अच्छी फसल उगती है. हम हर दिन गेहूं की रोटी और मांस खाते हैं. हमारे पास भरपूर दूध, मक्खन और अंडे होते हैं. यहाँ के जानवर भी बड़े और स्वस्थ हैं. यहाँ हर कोई मेहनत करने वाला अच्छी तरह से जी सकता है.

दुनिया के सभी देशों के लोग यहाँ एक-साथ रहते हैं और उन्हें अपनी मनमर्ज़ी के धर्म का अभ्यास करने की स्वतंत्रता है.

अगर आप लोग अमेरिका आएं तो मुझे बहुत खुशी होगी. यहां पर सभी के लिए जगह है. यदि आप आने का मन बनाएं तो आप अपने सब सामान को बेंचकर आएं. यात्रा के लिए और अमरीका में जमीन खरीदने के लिए आपको धन की आवश्यकता होगी. अपने साथ आप वही सामान लेकर आएं जो आप खुद उठा सकें और ऐसा भोजन लाएं जो समुद्र में खराब न हो. मैं आपके अमेरिका आने की राह देखूँगा.

आपका दूर का दोस्त बर्टल

हर शाम पापा-मामा इस पत्र को पढ़ते थे. मैंने उन्हें देर रात तक कानाफूसी करते हुए सुना. उन्होंने बेहतर जीवन की तलाश के लिए अमेरिका जाने की चर्चा की. इसका मतलब होगा कि हमें सब कुछ पीछे छोड़ना होगा - पैदाइशी शहर, चाची-चाचा, चचेरे भाई, यहाँ तक कि दादाजी भी.
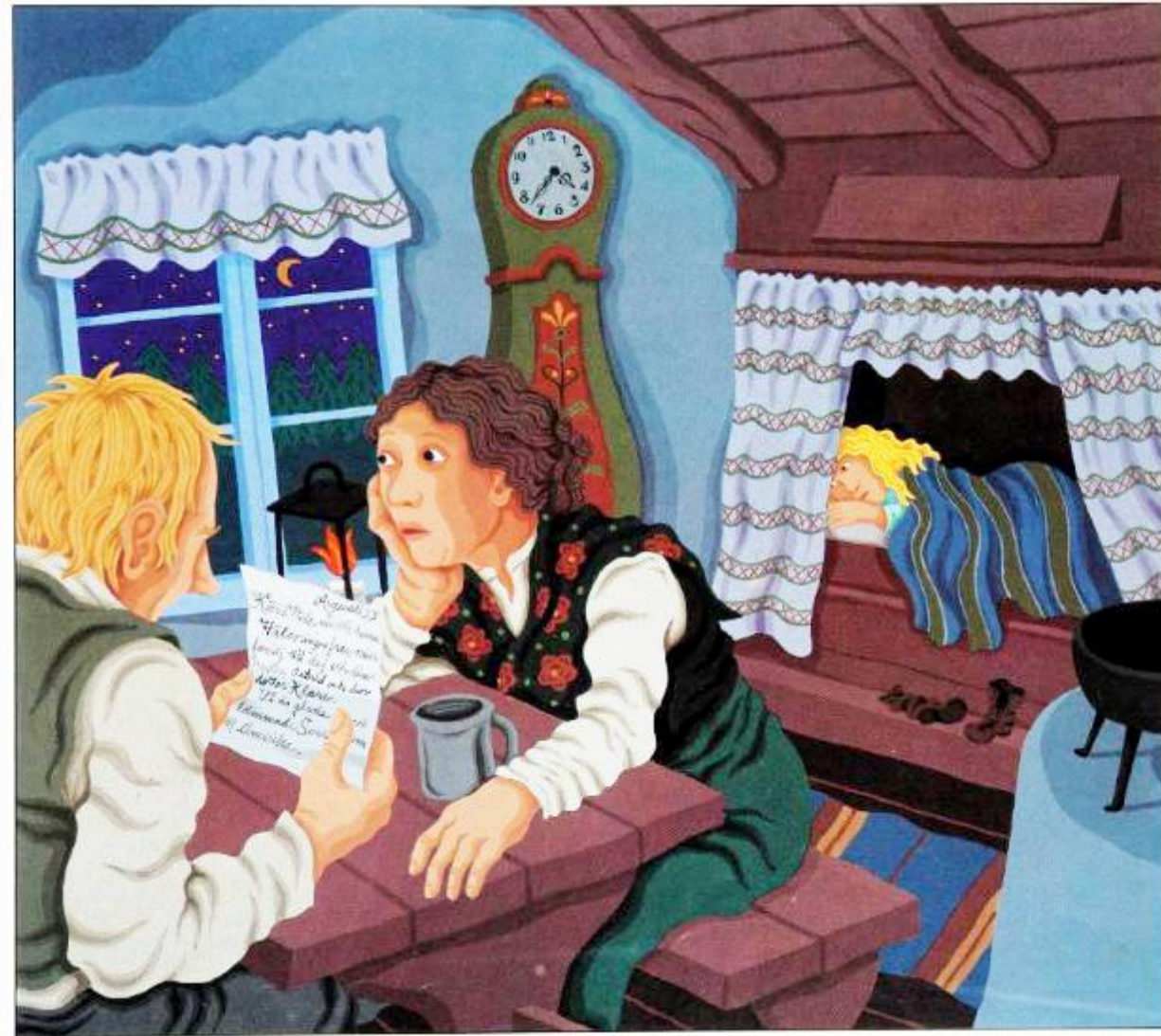
अंत में अमरीका जाने की बात तय हुई. हम वसंत में अमेरिका के लिए रवाना होंगे. सर्दियों के अंधेरे में हमने यात्रा के लिए तैयारियां शुरू कीं. माँ ने अपने करघे पर नया कपड़ा बनाया. पापा ने अमेरिका ले जाने के लिए संदूक बनाया, और दादाजी ने उसे पेंट किया. हमने जहाज की यात्रा के दौरान भोजन खरीदने के लिए अपना घोड़ा बेचा. मैंने रोटियां सेंकने में माँ की मदद की. हमने नमकीन रोटी, नमक लगा सूअर का गोश्त, और गाय का सूखा मांस बनाया. हमने पनीर और मक्खन भी बनाया, और साथ में सेब भी सुखाए.
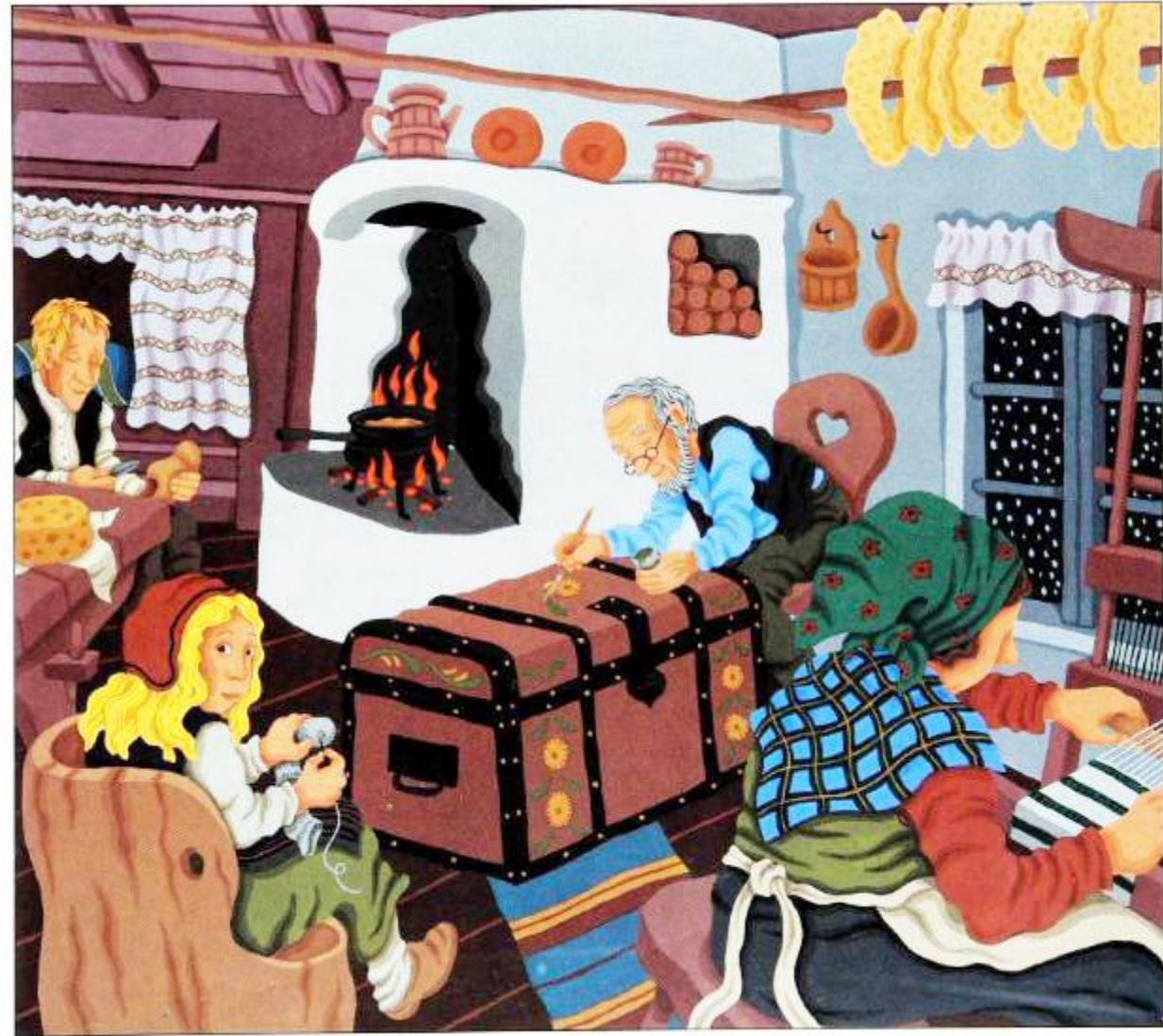
जब वसंत आया, तब हमने एक नीलामी आयोजित की और उसमें वो सब कुछ बेच दिया जिसे हम अमेरिका नहीं ले जा सकते थे - पापा का हल, सुंदर पुरानी घड़ी, माँ का करघा, पालना जिसमें माँ ने मुझे झुलाया था, वो छोटी गाड़ी जो दादाजी ने मेरे लिए बनाई थी. हमने अपनी बूढ़ी गाय किसी को दान कर दी. इस सामान की हमें वहां बहुत याद आएगी. लेकिन सबसे ज्यादा हमें दादाजी की याद आएगी. बूढ़े होने के कारण वो इतनी लंबी यात्रा करने में असमर्थ थे और वो दादी को छोड़कर नहीं जाना चाहते थे. दादी की कब्र पास के चर्च के कब्रिस्तान में थी.

जाने से पहले के कुछ दिन हमें बोरिया-बिस्तर, टोकरियां और संदूक भरने में लगे. हमने पापा के भारी औजार, बंदूक और उनका मछली पकड़ने का सामान संदूक के पेंदे में पैक किया. फिर केतली, बर्तन, लकड़ी की प्लेटें, मग, चाकू और कांटे आदि भरे. फिर माँ का चरखा, सुई-धागा, बिस्तर, साबुन, कपड़े, और परिवार बाइबिल आदि रखी. अंत में हमने समुद्र की यात्रा के लिए सूखा मांस, स्मोक्ड हेरिंग, चपटी ब्रेड, चीज, मक्खन, आटा, कॉफी, चीनी, आलू, सूखे सेब, नमक और काली मिर्च, और ब्रांडी आदि को टोकरियों और बोरों में भरा.

फिर एक दिन बिल्कुल सुबह-सुबह अंकल मैग्नस अपनी वैगन के साथ हमारे घर आये और हमें जहाज तक ले गए. हमने अपनी सारी चीज़ें वैगन में भरीं. तमाम रिश्तेदार और मित्र हमसे अलविदा कहने आये. मैंने आखिरी बार दादाजी को गले लगाया. उन्होंने मेरे हाथ में एक छोटी ही थैली दी और कहा, "ये बीज हैं, क्लारा. उन्हें अमेरिका में जाकर बोना. वो तुम्हें स्वीडन की याद दिलाएंगे."

जैसे ही हम दूर गए, तब हमने दादाजी को बहुत देर तक अपना हाथ लहराते हुए देखा. अंत में हमारी वैगन पहाड़ी के ऊपर चली गई. मैंने अपने हाथों में बीजों की थैली को कसकर पकड़ के रखा. सड़क पर तमाम पड़ोसी अंतिम अलविदा कहने के लिए खड़े थे. पापा ने उनसे कहा, "आप भी अमरीका आना. वहां पर ज़रूर मुलाक़ात होगी."

हमने अगले पूरे दिन यात्रा की. उस शाम हम गोथेनबर्ग के बंदरगाह पहुंचे. हमारे जैसे कई परिवार भी वहां अमेरिका जाने के लिए आए थे. जहाज हम सभी लोगों के लिए बहुत छोटा लग रहा था. चाचा मैग्नस ने जहाज़ पर सामान ले जाने में हमारी मदद की. फिर कप्तान ने उन सभी लोगों से उतरने को कहा जो अमेरिका नहीं जा रहे थे. फिर हमने अंकल मैग्नस से अलविदा कहा.

जहाज़ में डेक के नीचे इतना अंधेरा और भीड़ थी कि हम मुश्किल से देख या हिल सकते थे. हमें अगले कई हफ्ते यहीं बिताने थे. हमें जो छोटा स्थान मिला था वहां केवल एक मोटा भूसे का गद्दा था. हमने संदूक का मेज के रूप में इस्तेमाल किया. पापा ने दो खूँटों के बीच एक कंबल खींचकर मेरे सोने के लिए एक झूला बनाया. माँ ने ज़रूरत के बर्तन - केतली, डोंगे, और प्लेटें बाहर निकालीं. वो बारी आने पर बाहर गैली के बड़े स्टोव पर हमारे लिए खाना पकाने जाती थीं. इतने सारे परिवारों के साथ रहने में काफी तकलीफ भी थी, फिर भी माहौल हंसमुख और खुश था.

अगली सुबह हमारे जहाज़ ने अपनी यात्रा शुरू की. हम स्वीडन की एक अंतिम झलक के लिए डेक पर खड़े थे. बोर्ड पर एक पादरी के साथ हमने एक सुरक्षित यात्रा के लिए प्रार्थना की. तट के गायब होने के साथ पापा की आंख में भी आंसू भर आए. मैंने उन्हें फुसफुसाते हुए सुना, 'मेरी मातृभूमि, विदाई.'

यात्रा के दौरान माँ-पिताजी और मैंने अपना ज़्यादा समय डेक पर ठंडी हवा के झोंके झेलते हुए बिताया. जो लोग समुद्री यात्रा से बीमार थे, वे डेक के नीचे रुके, जहाँ हवा ठहरी और खराब थी.

जिस दिन आसमान साफ़ होता उन दिनों छोटे डेक पर भीड़ लगी होती. हमने अन्य लोगों के साथ अपना खाना बांटा और कहानियाँ सुनाईं. मैंने नए दोस्त बनाये और उनके साथ छिपा-छिपी का खेल खेला. बूढ़ा गुस्ताफ जो हमारे ही गाँव से आया था ने अपनी फिडल बजाई जिसके संगीत पर हम लोग नाचे-गाये. रविवार की सुबह को पादरी प्रार्थना की अगुवाई करते और गुस्ताफ अपनी फिडल पर भजन सुनाता था.

फिर एक दिन बहुत तेज हवा चली. समुद्र में तूफ़ान आया. जहाज इतनी ज़ोर से हिलने-डुलने लगा कि हम मुश्किल से चल पाए. शीत लहरों के झोंके पूरे डेक पर टकरा रहे थे. हम लोग नीचे ही रुके. सामान इधर-उधर लुढ़क रहा था. दूध और शराब के ड्रम लुढ़ककर एक-दूसरे से टकरा रहे थे. कुछ देर में उनके अंदर की सामग्री बाहर निकल आई. नाविकों ने बारिश से बचने के लिए डेक के छोटे दरवाज़े को बंद कर दिया. फिर हम नीचे मुश्किल से सांस ले पाए. कोई भी खाना नहीं बना सका. हमारे पास पीने के लिए ताजा पानी भी नहीं था.

मुझे बुखार के साथ चक्कर आए और गर्मी लगी. माँ और पिताजी मेरी देखभाल करते रहे. मैंने दादाजी के शब्दों के बारे में सोचा "स्वीडन को याद रखना."

तूफान पूरे दो दिन और दो रात तक चला. तीसरे दिन समुद्र शांत हुआ. मेरा बुखार ठीक हुआ लेकिन कई अन्य यात्री अभी भी बीमार थे. भीड़ वाले जहाज पर बुखार फैल रहा था.

आठ महीने का एक छोटा लड़का, रात में मर गया और उसे अगले दोपहर को दफनाया गया. जहाज के बढ़ई ने एक छोटा ताबूत बनाया. हमने भजन गाए, और कप्तान ने प्रार्थना की. फिर नाविकों ने ताबूत को समुद्र में बहाया. लहरों में वो जल्दी ही विलीन हो गया.

दो महीने तक हमने केवल आकाश और पानी ही देखा. बुखार के कारण कुछ अन्य यात्रियों की भी मौत हुई. हमारे खाने की सप्लाई अब धीरे-धीरे कम और खराब होने लगी थी, लेकिन एक नए जीवन की उम्मीद हमें हिम्मत बंधा रही थी. मुझे पता था कि मैं स्वीडन को फिर से कभी नहीं देख पाऊंगी. यह बात मैंने माँ से पिताजी को कहते हुए सुनी थी. अपने जीवन में ऐसी यात्रा लोग केवल एक ही बार करते थे. मैंने दादाजी के उपहार को कसकर पकड़कर रखा था.

फिर एक दिन जहाज़ की रेलिंग पर एक छोटा पक्षी आया. वो समुद्र से बहुत दूर निकल आया था और वहां कुछ देर बैठकर अपने थके हुए पंखों को बस आराम देना चाहता था. वो छोटा पक्षी भूमि से हमारा पहला संदेशवाहक था. अगले कुछ दिनों में हमने कई अन्य पक्षी और डॉल्फ़िन देखे. माँ ने कहा अब हम अमेरिका के काफी करीब होंगे. फिर कोई चिल्लाया 'भूमि!' और तब सभी लोग रेलिंग पकड़ कर खड़े हो गए. अंत में हम अमेरिका पहुंचे.

फिर हम एक बड़ी खाड़ी में से गुज़रे जहाँ कई देशों के झंडे वाले जहाज खड़े थे. कितना भव्य दृश्य था! वहां पर हमें हर घर एक महल जैसा दिख रहा था. कप्तान ने हमें सामने की ओर मैनहट्टन द्वीप और बाकी दोनों ओर स्टेटन द्वीप और ब्रुकलिन दिखाए. हमारा जहाज़ दो दिनों के लिए खाड़ी में लंगर डाले हुए खड़ा रहा. जब हम इंतजार कर रहे थे तब डॉक्टरों ने यात्रियों की जांच की. वो यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि किसी को चेचक या टाइफस जैसी कोई गंभीर बीमारी तो नहीं थी. उतरने के बाद, हमें स्टीमबोट के ज़रिए मैनहट्टन द्वीप में एक बड़े गोल भवन में ले जाया गया. उस भवन का नाम था - कैसल गार्डन.
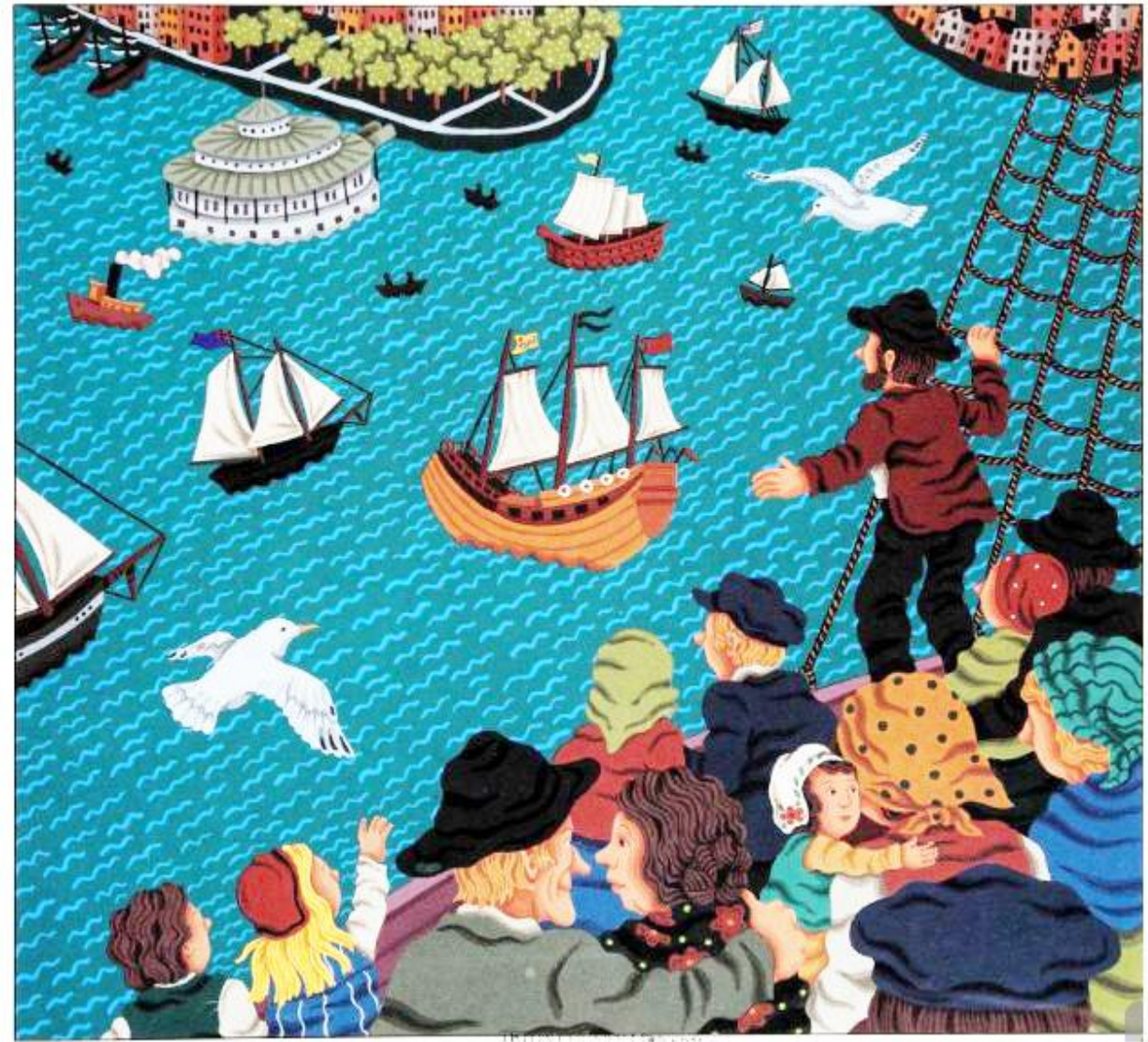
उस इमारत के अंदर हमने खुद को, अपने जैसे ही सैकड़ों अन्य लोगों के बीच पाया जो हमारे जैसे ही तभी- तभी अमेरिका पहुंचे थे. उनमें नॉर्वेजियन, फिनिश, इंग्लिश, जर्मन, डच, रशियन, आयरिश और इटालियन लोग सभी अपनी-अपनी भाषा बोल रहे थे. मुझे बहुत अजीब लग रहा था क्योंकि मैं उनकी बात बिल्कुल नहीं समझ पा रही थी.

पहले हमें इमीग्रेशन ऑफिस में पंजीकरण करना था. एक गाइड ने स्वीडिश में बात की. उसने पापा के स्वीडिश पैसों को अमेरिकी करेंसी में बदलने में मदद की. उसने बर्टिल के घर की यात्रा के लिए मिनेसोटा के लिए रेल और स्टीमर के टिकट खरीदने में भी हमारी मदद की.

पापा अपना काम पूरा करके कैसल गार्डन के बाहर गए और सड़क विक्रेताओं से ताज़ी ब्रेड और मीठा दूध खरीद कर लौटे. वो साथ में फल भी लाए जिनके बारे में मैंने केवल सुना था लेकिन जिन्हे पहले कभी देखा नहीं था - संतरे और केले. समुद्र में लंबे समय के बाद हमें इस अमेरिकी भोजन का स्वाद बहुत अच्छा लगा.

उस रात हम कैसल गार्डन की ही एक बेंच पर सोए. अगली सुबह माँ, पिताजी और मैंने जहाज के अपने दोस्तों को अलविदा कहा. हमारे रास्ते हमें अलग-अलग दिशाओं में ले जाएंगे. अब केवल ओल्ड गुस्ताफ फिडलर ही हमारे साथ मिनेसोटा जा रहा था.

हमने अपने ट्रंक, बोरियों और टोकरियों को एक बड़ी स्टीमबोट पर लोड किया. मैंने देखा था कि अच्छे कपड़े पहने हुए लोग ऊपरी डेक पर सवार हुए. अमेरिका में आये नए लोगों के साथ हमें सबसे नीचे वाले डेक में भीड़ के साथ रखा गया. हम सब लोग पश्चिम की ओर जा रहे थे. लेकिन हम एक-दूसरे की बात को समझ नहीं पा रहे थे. भले ही मेरे चारों तरफ लोग थे लेकिन फिर भी मुझे बहुत अकेलापन महसूस हुआ.

स्टीमबोट हमें हडसन नदी से अल्बानी तक ले गई. वहां से हमें ट्रेन में सफर करना पड़ा. ट्रेन की खड़-खड़ से मुझे जल्द ही नींद आ गई. जब मैं अगली सुबह उठी, तो मैंने खिड़की से बाहर मोटी गायों को ऊँची घास में चरते हुए देखा. अब मम्मी और पापा खुश दिख रहे थे.

अमेरिका कितना बड़ा था! हम अभी भी न्यूयॉर्क राज्य में थे और मिनेसोटा अभी भी काफी दूर था. जब हम बफ़ेलो शहर पहुंचे, तब हमें ट्रेन छोड़नी पड़ी. हमें बड़ी नदियों को पार करने के लिए फिर से स्टीमर पर सवार होना पड़ा. पापा ने मुझे उन नदियों - एरी, ह्यूरन, सुपीरियर, ओंटारियो, और मिशिगन के नाम बताए. तीन दिनों तक मुझे लगा जैसे मैं फिर से समुद्र पर थी! ओल्ड गुस्ताफ ने नीचे के डेक पर हम सभी के लिए अपनी फिडल पर जाने-पहचाने गाने बजाए.

शिकागो में हम आखिरी बार एक छोटी स्टीमबोट में बैठे, जो हमें मिसिसिपी नदी ने ऊपर की नहर तक ले गई. जैसे-जैसे हमारी स्टीमबोट उत्तर की ओर बढ़ी वैसे-वैसे जंगल और सघन होता गया. एक बार मैंने कुछ स्थानीय इंडियंस को पेड़ों के बीच से हमें ताकते हुए देखा. बूढ़े गुस्ताफ़ ने वाबाशा में स्टीमबोट छोड़ी. वहां उसका बेटा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था. हमने रेड विंग तक उत्तर की यात्रा जारी रखी. अब दादाजी से अलविदा कहे हुए मुझे तीन महीने बीत चुके थे.

हमें बर्टिल का घर कैसे मिलेगा?

हमारे पास केवल एक कागज की एक पर्ची पर बर्टिल का नाम और शहर लिखा था. हम कोई भी नहीं मिला जो स्वीडिश बोल सकता था. अंत में पापा ने बर्टिल के घर जाने के लिए एक तरह की साइन लैंग्वेज यानि इशारों का इस्तेमाल किया. उन्होंने हमारे सामान को ले जाने के लिए एक बैलगाड़ी किराए पर ली. हम जंगल के रास्ते मीलों तक चले. फिर, एक खुले मैदान में हमने एक आदमी को लकड़ी काटते देखा. पापा ने उसे आवाज़ दी. वो बर्टिल ही था! उसने अपनी कुल्हाड़ी गिरा दी और वो हमसे मिलने के लिए दौड़ा. बर्टिल की पत्नी एना अपने बच्चे को पकड़े केबिन से बाहर भागी. हम एक-दूसरे से गले मिले, और खुशी से रोए.
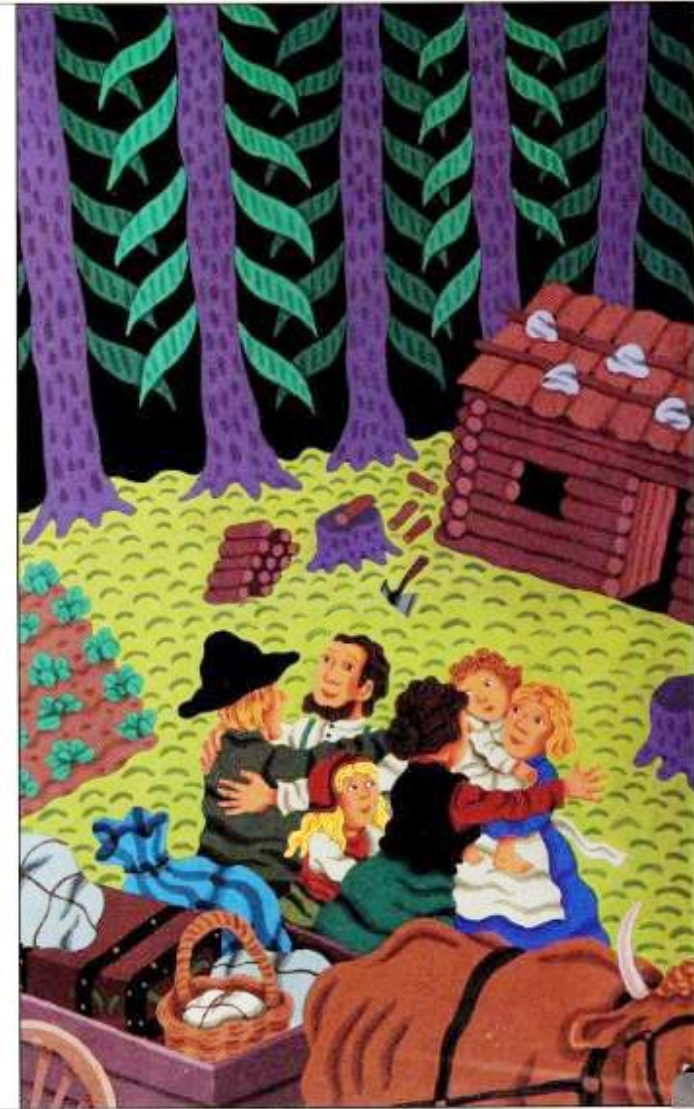
अगले दिन पापा और बर्टिल हमारे लिए जमीन का एक टुकड़ा खोजने के लिए गए. ज़मीन की मिट्टी अच्छी हो, और वहां भरपूर पानी और पेड़ होने चाहिए थे. जब पापा को सही जगह मिली, तो उसे खरीदने से पहले वो माँ और मुझे ज़मीन दिखाने के लिए लौटे. जब मैंने ज़मीन देखी तो मुझे लगा कि अब पापा को फिर कभी बड़े पत्थरों के साथ संघर्ष नहीं करना पड़ेगा.

पापा और बर्टिल ने जंगल को साफ़ कर एक सड़क बनाई. उन्होंने हमारे नए घर के लिए पेड़ों को काटा. पापा और बर्टिल ने जल्दी-जल्दी काम किया. मैंने लकड़ी के तनों के बीच की दरारों में मिट्टी भरने में मदद की. सिर्फ सात दिनों में घर बन गया जो स्वीडन में हमारी झोपड़ी से छोटा था. घर में केवल एक कमरा था और हमारे पुराने घर की तरह उसमें एक घास की छत थी. स्टूल के लिए पिताजी ने पेड़ के तनों को काटा. हमने मेज के लिए दुबारा अपने संदूक का इस्तेमाल किया, और पापा ने लकड़ी के लट्ठों से पलंग बनाया. पापा ने कहा कि लंबी सर्दियों में वो सही तरह की मेज और कुर्सियां बनाएंगे. घर बनने के बाद माँ बहुत खुश हुईं. उन्हें असली फर्नीचर की इतनी ज़रुरत भी नहीं थी. मैंने सारी चीजें करीने से रखने में माँ की मदद की.

पापा ने बर्टिल के बैल उधार लिए और उनसे जमीन की जुताई की. पौधे लगाते समय उन्होंने दादाजी के बीज लगाने के लिए मेरे लिए एक छोटा सा प्लाट अलग रखा. सर्दियों से पहले, हमने गेहूं, आलू और शलगम की एक अच्छी फसल काटी, जो वसंत तक हमारा काम देगी. सबसे अच्छी बात हुई कि दादाजी के फूल अच्छी तरह खिल उठे.

फिर सर्दियों की रात को पापा ने अमेरिका से पहला पत्र लिखा:

प्रिय और हमेशा याद आने वाले पिताजी,
आप स्वीडन में हमसे बहुत दूर हैं लेकिन हम आपको भूले नहीं हैं. हम सबकी सेहत अच्छी है और अमेरिका में हमारी स्थिति भी अच्छी है. हमें वैसी ही बढ़िया ज़मीन मिली जैसी हम चाहते थे. यहाँ सब कुछ अच्छा उगता है. हमारे पास पचास एकड़ ज़मीन है और एक छोटा सा घर है. हमने अभी अपनी पहली फसल काटी है. हम अपनी झील में मछली पकड़ते हैं और जंगल में शिकार करते हैं. ज़मीन हमें सभी ज़रुरत की चीज़ें देती है - यहां तक कि झाड़ू-तिनके, चम्मच और खिलौने भी. लेकिन मुझे अपने प्यारे पिता की बहुत याद आती है और मैं अपने बचपन के घर को कभी नहीं भूलूंगा.

सप्रेम निल्स, एस्ट्रिड, और क्लारा

क्लारा ने आपके लिए यह फूल भेजा है. उसे आपकी बहुत याद आती है.

1800 के दशक के उत्तरार्ध में, क्लारा जैसे हजारों स्कैंडिनेवियाई बच्चों ने बेहतर जीवन की तलाश में अपने परिवारों के साथ अमेरिका की यात्रा की. उस समय स्वीडन पर एक राजा और धनी ज़मींदारों के एक उच्च वर्ग का शासन था. क्लारा और उसका परिवार गरीब किसान थे. उनके पास ज़मीन का एक छोटा, पथरीला टुकड़ा था. सबसे अच्छी ज़मीन एक अमीर जागीरदार की थी. गांव के कई बच्चे पहले से ही उसके यहाँ काम करते थे.

सत्तारूढ़ अमीरों ने गरीब किसानों को लगातार अमेरिका न जाने की सलाह दी. उन्होंने कहा कि अमरीका की जलवायु असहनीय रूप से गर्म थी और वहां केवल डाकू और बदमाश ही रहते थे.

लेकिन जो दोस्त और रिश्तेदार अमेरिका में पहले से ही बसे थे, उन्होंने वहां की बिल्कुल अलग कहानी बताई. उन्होंने कई लोगों को अमरीका आने के लिए राजी किया. क्लारा की यात्रा 1860 के दशक में हुई. उस समय स्वीडन में अकाल पड़ा और फसल नष्ट हो गई. उन कठिन परिस्थितियों ने हजारों लोगों को अमेरिका में एक नया जीवन खोजने के लिए मजबूर किया.

क्लारा और उसके परिवार ने एक जहाज पर सवार होकर अमेरिका की यात्रा की. इस यात्रा में छह से आठ सप्ताह लगते थे. यदि जहाज अपने रास्ते से थोड़ा भटक जाता तो यात्रा में तीन महीने तक का समय लग सकता था. सदी के अंत तक, नए और तेज स्टीमरशिप द्वारा यह यात्रा कुछ ही दिनों में पूरी की जा सकती थी.

1855 में आप्रवासियों के लिए कैसल गार्डन - आधिकारिक तौर पर लैंडिंग स्थल बन गया था. वहां पंजीकरण करने के बाद आप्रवासी लोग नहा-धो सकते थे, भोजन खरीद सकते थे, करेंसी बदल सकते थे, वे कई अलग-अलग भाषाओं में जानकारी प्राप्त कर सकते थे, और नौकाओं और रेलमार्गों के टिकट खरीद सकते थे. वो आगे की यात्रा करने से पहले वहां आराम कर सकते थे.

क्लारा अपने दादाजी के साथ केवल पत्र लिखकर ही संवाद कर सकती थी. ज़मीन को साफ करने, जुताई करने, घर निर्माण करने, और फसलों की कटाई के बाद ही क्लारा के परिवार को पत्र लिखने के विशेष कार्य के लिए समय मिला. घर पर इस प्रकार के पत्र भेजने को "अमेरिका पत्र" कहा जाता था.

स्वीडन से जो बीज क्लारा लाई थी वे जेंटियन के फूल थे. इन सुंदर नीले फूलों को आज भी बगीचों में और मिडवेस्ट के जंगलों में खिलते हुए देखा जा सकता है.

समाप्त